Department of History

Russa 2.0

Year 2024-25

S.No	Session	Names of Programmes/ Activities	Allotted Amount (Rs.)	Amount Utilized (Rs.)	Balance (Rs.)	Relevance of Programme	Benefit to College and Students from the programme
01	2022-23	Workshop	37610	37610	Nil	Development of Skill and employability to students	A skill enhancement course on Bamboo art offers students numerous benefits, including acquiring advanced crafting techniques, fostering creativity, and potentially leading to self-employment opportunities.

Bamboo Art Training Workshop

Programme . Value Added (Skill Enhancement Programme)

The Department of History organized two week workshop on Bamboo Art Training Workshop for UG &PG students of the college from 20 February – 3 March 2023. The training Programme was inaugurated on 20th February 2023 and closing ceremony was held on 13 April 2023.

Objectives of the workshop

To acquaint students about rich regional art.

Training for promotion of our traditional popular art.

Skill development of students for self-employment.

About 57 students attended the workshop. All the participants enjoyed the workshop. Overall, the workshop was successful and participants acquired the knowledge of rich regional art of Chhattisgarh.

S.N	Date	Training Schedule	Hours
ο.			
01	20 February 2023	General Introduction about the course & Information about the materials required for it.	03 Hours
02	21-25 February 2023	Structure preparation	04 Hours each day 5x4 = (Total 20 Hours)
03	26-28 February 2023	Training to decorate it with fine bamboo sticks and blades.	04 Hours each day 3x4 (Total 12 Hours)
04	1-3 March 2023	Filling the gaps & Colouring	04 Hours each day 3x4 (Total 12 Hours)
		Total	47 Hours

कार्यालय प्राचार्य

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.) [पूर्वनामः शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)] फोन नं. 0788.2359688, फैक्स नं. 0788.2212030 Website: www.govtsciencecollegedurg.ac.in

दिनांक 17.02.2023

इतिहास विभाग

सूचना

महाविद्यालय के प्राध्यापकों एवं सभी संकायों के स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षा के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि इतिहास विभाग द्वारा 😝 दिवसीय बाँस शिल्प प्रशिक्षण कार्यशाला का शुभारंभ 20 फरवरी 2023 से किया जा रहा है ।

प्रशिक्षण के लिए इच्छुक विद्यार्थी इतिहास विभाग से संपर्क कर एडिमशन फार्म प्राप्त करें एवं दिनांक 20/02/2023 को ए.पी.जे. स्मार्ट क्लासरूम में 12.00 बजे अनिवार्य रूप से उपस्थित रहे ।

> - Traition on शास. वि. या. ता. स्नात. स्वशासी महावि दर्ग (छ.ग.)

Elet . 61--कौशल विकास • साइंस कॉलेज में हुनरमंद बनाने के उद्देश्य से विद्यार्थियों को सिखाई जा रही है कलाकृतियां बनाना बांस शिल्प में छात्र-छात्राओं ने ढाले गिरौधपुरी और भोरमदेव मंदिर समेत छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक स्थल

पुरातात्विक धरोहरों के इतिहास के बारे में भी जानने का मौका मिलेगा ज्य के ऐतिहासिक, पौराणिक और पिक मान्यताओं को साकार करने, पीढ़ी को उसका महत्व बताने र बच्चों को हुनरमंद बनाने के स्य से साइस कॉलेज में विर्थियों को बांस शिल्प से राजीव लोचन मंदिर

गन को आकार दिया जा रहा है। **सभी संकायों के विद्या**र्थी सीख रहे कलाकृतियां बनाना

कॉलेज में पढ़ रहे सभी संकाय के विद्यार्थी बांस शिल्प की बारीकियां सीख रहे हैं। इसमें कला विषयों के साथ विज्ञान और वाणिज्य के विद्यार्थी भी उसमें काफी रुचि ले रहे हैं। बॉस शिल्प कलाकार रामकमार पटेल एवं उनके सहयोगी शुभम वर्मा के मार्गदर्शन में छात्र-छात्राओं को बांस शिल्प की बारीकियां जनजातीय आकृतियों को भी सिखाई जा रही है। इसमें कलाकृति के अनुसार बांस चुनना, फिर उसे तराशना उकेरना सिखाया जा रहा है। और चिपकाकर उसे अपनी मनपसंद आकृति प्रदान करना बता रहे हैं।



विद्यार्थियों ने राजीव लोचन मंदिर और भोरमदेव मंदिर के कलाकृति बनाई

छगकी कला-संस्कृति और ऐतिहासिक जानकारी मिलेगी संस्था के प्राचार्य डॉ. आरएन सिंह ने बताया कि बांस शिल्प से बच्चे राज्य की संस्कृति और ऐतिहासिक धरोहरों को उकेर रहे हैं। इससे न केवल उन्हें छत्तीसगढ़ की कला, संस्कृति और पुरातात्विक धरोहरों की सही जानकारी मिल सकेगी, बल्कि उन्हें रोजगार का एक साधन भी मिल सकेगा। पढाई और डिग्री के साथ उनके हाथों में बांस शिल्प बनाने का हनर भी होगा।

स्वरोजगार के रूप में भी अपना सकेंगे विद्यार्थी

> इतिहास विभाग के अध्यक्ष हों. अनिल कुमार पंडिय ने बताया कि इस प्रशिक्षण से विद्यार्थियों को अपने भीतर हुनर विकस्तित करने का मौका मिलगा। इस कला को कर सकेंगे। साथ ही दसरों को जगार भी दे सकेंगे। इसी उद्देश्य से छात्र-छात्राओं को बांस शिल विद्यार्थी बडी लगन से रुचि लेकर सीख रहे हैं। साथ ही अपनी कलात्मकता और कल्पना शक्ति का परिचय दे रहे हैं। इस कला का लाभ ये विद्यार्थी जीवन भर उठा सकेंगे। साथ ही अपने साथियों औ अन्य लोगों को भी सिखा सकेंगे। इसी उद्देश्य से उन्हें प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

मग भी बनाए जा रहे हैं।

वासी संस्कृति के संवर्धन के

महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा निर्मित विविध शिल्प कलाओं की मनोहारी प्रदर्शनी भी आयोजित की गयी

इससे विद्यार्थी को जानकारी मिलेगी।

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग में आयोजित बास शिल्प एवं पुरातात्विक प्रतिकृति प्रशिक्षण कार्यशाला का हुआ समापन समारोह

रिपोर्टः रवि प्रकाश ताम्रकार

दुर्ग (दबंग केसरी) दिनांक 1304.2023 को शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दर्ग के इतिहास विभाग द्वारा आयोजित पुरातात्विक प्रतिकृति प्रशिक्षण कार्यशाला एवं वास शिल्प प्रशिक्षण कार्यशाला का समापन समारोह उच्च शिक्षा विभाग की आयक्त श्रीमती शारदा दमा के मख्य आतिथ्य एवं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर एन सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। साथ ही महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा निर्मित विविध शिल्प कलाओं की मनोहारी प्रदर्शनी भी आयोजित की गयी। परातात्विक प्रतिकृति के प्रशिक्षक कलाकार श्री रामशरण प्रजापति एवं श्री राजेन्द्र सुंदरिया, मटपर्इ प्रशिक्षक ग्राम डमरडीह के अभिषेक सपन एवं बांस शिल्प के प्रशिक्षक श्री राम शमार पटल एवं उनके सहयोगी शभम साह तथा टेराकोटा एवं सेरेमिक आर्ट की प्रशिक्षक क प्रजा नेमा को उनके सहयोग के लिए इतिहास विभाग द्वारा सम्मानित



किया गया। इतिहास विभाग में विशिष्ट योगदान हेत प्रियम वैष्णव वैष्णवी याग्निक एवं प्रजा नमः को भी सम्मानित किया गया। कार्यशाला के प्रतिभागी विद्यार्थियों एवं प्राध्यापको को प्रमाणपत्र प्रदान किये गए। मख्य अतिथि उच्च शिक्षा आयक्त श्रीमती शारदा वर्मा ने अपने उदबोधन में कहा कि इतिहास विभाग द्वारा आयोजित विविध शिल्प कलाओं में निर्मित कलाकतियों के अवलोकन से सखद अनुभृति हुई । महाविद्यालय नई शिक्षा नीति के अनरूप नवाचार के माध्यम से

विद्यार्थीयों में स्वरोजगार के लिए प्रेरित करने हेत कार्यक्रम महाविद्यालय में इतिहास विभाग के द्वारा निरन्तर प्रयास कर रहा है। कार्यशाला के माध्यम से हम अपनी कला संस्कृति को समझने एवं उनको संरक्षित करने में सफल होंगे। इसके लिये महाविद्यालय प्रशासन एवं इतिहास विभाग के प्रयास की उन्होंने प्रशंसा की स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कमार पांडेय ने बताया कि नई शिक्षा नीति के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कौशल विकास एवं फैकल्टी डेवेलोपमेंट कार्यशाला का आयोजन किया गया। पुरातात्विक प्रतिकृति, बास शिल्प, मटपरई शिल्प एवं टेराकोटा शिल्प प्रशिक्षण से विद्यार्थियों को छग की स्थानीय कला से परिचित कराने उनको संरक्षित करने एवं विद्यार्थियों को स्वरोजगार के लिए प्रेरित करने हेत विभाग निरंतर कार्यशालाओं का आयोजन कर रहा हैं। महाविद्यालय के प्राचार्य एवं संरक्षक, डॉ. आर. एन. सिंह ने अपने उदबोधन में कहा कि संचालन एवं धन्यवाद जापन विभाग का प्रध्यापक छत्तीसगढ की लोक संस्कृति एवं राजगार मुलक 📑 ज्योति धारकर ने दिया।

सतत किये जा रहे हैं और इससे विद्यार्थियों को स्वराजगार के लिय प्ररित किया जा रहा है। साथ ही उनको लोक संस्कृति से भी परिचित कराया जा रहा है और इसके लिये महाविद्यालय एक डिप्लोमा कोर्स शुरू करने जा रहा हैं ताकि विद्यार्थियों को इस तरह का प्रशिक्षण नियमित मिलता रहे महाविद्यालय में कला 1 एवं परातत्व पर आधारित एक संग्रहालय स्थापित करने की भी इच्छा उन्होंने व्यक्त की । कार्यक्रम में आई क्यु ए सी की कोडिनेटर प्रो. जगजीत कौर सलुजा, प्रो. अनपमा अस्थाना, प्रो. पदमावती प्रो. अजय सिंह. प्रो. आर. एस. सिंह, प्रो. श्रीनिवास देशमख प्रो. शकील हसैन डा. विनाद अहरवार डा. के. पदमावती तथा अन्य प्रध्यापक, कर्मचारी एवं प्रतिभागी विद्यार्थियों के साथ अन्य संकायों के विद्यार्थी बडी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम का













S.No		Programmes/		Amount Utilized (Rs.)	Balance (Rs.)		Benefit to College and Students from the programme
	2023-24	Study Tour	16100	16100	Nil	tangible heritage and contributions of our regional rulers in	By experiencing the historical and cultural significance of Sirpur firsthand, students can enhance their understanding of history, develop critical thinking skills, and appreciate the importance of cultural preservation.
		Guest Lecture	2670	2670	Nil	A valuable addition to traditional classroom teaching, offering students a unique opportunity to learn from experts in their field.	2. help students to see the relevance of historical concepts to real-world issues
		Extension Activities	2600	2600	Nil	Promoted teamwork,	Helped college students develop important skills such as communication, problem-

Educational tour- Arang & Sirpur

The Department of History organized an educational tour for the Postgraduate students of the department on 1 March 2024, to acquaint them with the rich architectural and cultural heritage of Arang and Sirpur and inculcate in them a sense of preservation of our cultural heritage. About 25 students, along with the professor of the department, Dr. Jyoti Dharkar, visited important archaeological and historical sites of Arang and Sirpur.







Guest Lecture

On 7 March 2024, a guest lecture was organized by the History Department on the topic entitled, New Ideological Dimensions of the Indian National Freedom Struggle. The noted speaker, Dr. Sarita Dubey, Professor of History, Government D.B.Girls PG Autonomous College, Raipur, in her scholarly address, enhanced the knowledge of the students by highlighting various ideological perspectives of the struggle for freedom and satisfied their curiosity by giving satisfactory answers to their questions.







S.No	Sessio n		Allotted Amount (Rs.)	Amount Utilized (Rs.)	Balance (Rs.)	Relevance of Programme	Benefit to College and Students from the programme
01	2024-25	Teaching & Learning (Guest Lectures)	30,000	23280	6720	addition to traditional classroom	 Exposure to diverse perspectives. help students to see the relevance of historical concepts to real-world issues and careers. Provide opportunity to students to learn from experts in their field.
02		Extension Activities	20,000	3730	16270	Promoted teamwork, communication, and a deeper understanding of community needs.	

3	Capacity Building (National Seminar)	170000	170000		birth anniversary of Bhagwan Birsa Munda and recognize the	2. Provide students with a deeper understanding of
4	Industrial Training/ Study Tour	100000	14700	85300	Provide a unique opportunity for Contextual learning and understanding of different cultures and perspectives.	opportunity for history students to see artifacts and

5	Skill Devel	opment	50000	59657	The workshop	1.	It helps them develop
	Programme(Loh				provides a		their skills in metal
	Bastar)				structured		craftsmanship, a
					learning		traditional art form of
					environment		Bastar
					to acquire	2.	Provide students with a
					new skills for		valuable learning
					self-		experience that can
					employment		enhance their skills,
							knowledge, and career
							prospects.
						3.	Offer hands-on training,
							expert guidance,

S.No.	Topic of the Conference	Date of conference	Number of Resource persons/ Delegates	Fund Allotted	Fund Utilized
01	Bharatiya Itihas Me Janjatiyea Yogdan	5th and 6th March 2025	15/120	1,70,000	1,70000)

National Seminar Report

To honour the contributions of tribal freedom fighters and their rich cultural heritage, with a specific focus on remembering Bhagwan Birsa Munda on his 150th birth anniversary, the Department of History organized a national seminar on the topic entitled," Bharatiya Itihas Me Janjatiyea Yogdan"

The National seminar was held on 5th and 6th March 2025, with the funds allocated by RUSA 2.0. In addition to representatives from more than 12 states in the country, participants and resource persons from abroad also joined online. Along with Chhattisgarh, more than 15 resource persons and over 120 participants from various parts of India attended the national seminar.

On March 5, the inaugural ceremony of the seminar was held under the chief patronage of the Commissioner of Durg Division and Vice Chancellor of Hemchand Yadav University, Shri Satyanarayan Rathore. Senior historian Dr. Ravindra Sharma, who came from Jaipur, presented the keynote address. The closing session of the seminar was organized under the chief patronage of Dr. Rajesh Pandey, Regional Deputy Director, Durg Division at 4 pm on 6 March 2025. More than 70 research papers were read in a total of seven sessions of the seminar.





DURG BREAKING: शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय में 'भारतीय इतिहास में जनजातीय योगदान' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ आयोजन

https://www.shivnathsamvad.in/two-day-national-seminar-was-organized-on-the-topic-tribal-contribution-in-indian-history/

Door Darshan News

https://youtu.be/5icjZHUi1oQ?si=RO5k9WtHxJmqi Yz

शासकीय वि.या.त.स्नातकोत्तर स्वशासी.महाविद्यालय में नेशनल सेमिनार का शानदार आयोजन









- देश की जनजातियों की संस्कृति समृद्ध और इतिहास गौरवशाली-सत्यनारायण रादौर
- जनजातीय इतिहास और संस्कृति पर शोध की आवश्यकता-डा. आभा आर.पाल
- जनजातियों की चारित्रिक विशेषताएं प्रशंसनीय-डा.रविन्ट शर्मा
- सेमिनार जनजातियों के विस्नृत इतिहास को उजागर करने का सुअवसर-डा.अभय कुमार सिंह

इगरखंड देखो, प्रतिनिधि।

(छत्तीसगढ)ः राष्ट्रीव मल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (बेंगलुरु,कर्नाटक) से ए-प्लस मान्यता प्राप्त शासकीय विश्वनाथ (छलीसगढ़) के इतिहास विभाग में नेशनल सेमिनार 5-6 मार्च.2025 का भव्य और शानवार आयोजन किया गवा। भारतीय इतिहास में जनजातीय योगदान विषयक ये दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार के बतौर मख्य अतिथि के रूप में हेमचन्द विश्वविद्यालय,दर्ग कि जनजातियों द्वारा प्रकृति और के कलपति और संभागायक

सत्यनारायण राठीर ने इसका उद्घाटन करते हुए देश की जनजातियों की समृद्ध संस्कृति और गौरवशाली इतिहास को रेखांकित किया और कहा कि प्रकृति की रक्षा हेत् जनजातियों के दृष्टिकोण और उनके प्रवासों से हमें बहत कल सीखने की आवशयकता है। माननीय कुलपति राठौर ने महाविद्यालय में इतिहास विभाग द्वारा इसके प्रशाल में आयोजित नेशनल सेमिनार में देश के विभिन्न इतिहासकारों,प्राध्यपकों और शोध विद्वानों को संबोधित करते हए कहा जीवन को संतलित करने की

बेजोड कला भारतीय इतिहास को उनकी बेजोड़ देन है। उन्होंने डा. निवेदिता वर्मा की जनजातीय संस्कृति पर लिखित पुस्तक का विमोचन किया इसके पूर्व मुख्य अतिथि कलपति राठौर छल्तीसगढ इतिहास परिषद की अध्यक्षा और अतिथि डा.आंभा বিখিছ (सेवानिवत प्रोफेसर),महाविद्यालय के प्राचार्य और सेमिनार के संरक्षक डा.अभव कमार सिंह इतिहास विभाग के अध्यक्ष और नेशनल सेमिनार के संयोजक प्रोफेसर डा.अनिल कमार पाण्डेय, प्रख्यात वरिष्ठ इतिहासकार डा रविंद्र अध्यक्ष,इतिहास विभाग,कुरुक्षेत्र विवि.) आदि ने दीप प्रज्जविलत कर मां सरस्वती की अराधना की और नेजनल सेमिनार के आयोजन और इसकी सफलता की कामना की। बतौर विशिष्ट अतिथि डा. आंभा आर.पाल ने नेशनल सेमिनार के विषय- भारतीय इतिहास में जनजातीय योगदान--की प्रशसा की और इसके लिए इतिहास विभाग को बधाई वेते हए जनजातीय इतिहास और संस्कृति शोध किये जाने की आवशयकता बताई। उन्होनें कहा कि छत्तीसगढ़ की नहीं बल्कि देश

की सांस्कृतिक अभिवृद्धि में जनजातियों का महत्वपूर्ण योगवान है। प्राचार्य और नेशनल सेमिनार के संरक्षक डा.अजय कमार सिंह ने देश में हुए जनजातीय संघर्षों की विवेचना की और कहा कि वह नेशनल सेमिनार देश के जनजातियों के विस्मत स्वर्णिम अतीत को सामने लाने का सअवसर है । मौके पर मख्य वक्ता डा.रविन्द्र शर्मा ने भारतीय उपमहाद्वीप की सैन्य व्यवस्था में प्रतिबिम्बत जनजाति समाज के वोगदान की समीक्षात्मक विवेचना प्रस्तृत की और अपने विद्वातापूर्ण अभिनव सम्बोधन में इसके विभिन्न पहलुओं को रेखांकित किया। प्रो.शर्मों ने जनजातियों की चारित्रिक विशेषताओं पर टिप्पणी करते हुए जनजातियों की ईमानदारी ,वफावारी,जिम्मेदारी,राष्ट्रप्रेम और इंश्वर आराधना की विवेचना की। नेशनल सेमिनार के संवोजक डा. अनिल कमार पाण्डेय ने विषय की ऐतिहासिक महता को स्पष्ट किया और प्रशाल में उपस्थित इतिहासकारों प्राध्यपकों और शोध विद्वानों का स्वागत किया। सेमिनार के संयोजक प्रो. डा.पाण्डेय ने झारखंड देखो को यह भी बताया कि दो दिवसीय नेशनल सेमिनार में

कल आठ (सात और एक पैरेलल) टेकनिकल सेशन आयोजित किये गये जिसमें देश के विभिन्न प्रान्तों से आये इतिहासकारों,प्राध्यपकों और शोध विद्वानों ने अपने शोध आलेख प्रस्तत किये जबकि आनलाइन में देश के अलावा विदेशों-वएसए से मैत्रेयी वैद्या- से भी प्रख्यात विद्वान शामिल हुए जबकि उत्तराखंड से संजय कमार शामिल हुए और झारखंड से आनलाइन श्रवण कुमार (बरहरवा)ने (अभिषा राज रामपरहाट पश्चिम बंगाल के साध संयुक्त आलेख) जनजातीय समाज में महिलाओं की बदलती स्थिति पर विस्तत रूप से प्रकाश डाला और सरकारी योजनाओं से महिलाओं के लाभान्वित होने की समीक्षात्मक विवेचना प्रस्तुत की. जब श्री (पटना बिहार) ने जनजातियाँ संस्कृति,परम्परा और बारतीय इतिहास में उनके योगदान को रेखांकित किया। । प्रथम दिन आबोजित चार टेकनिकल सेशन में डा. रीता पाण्डेय.डा.पजा शर्मा.डा. राकेश चंदेल,डा. निवंदिता वर्मा.शारदा सिंह.डा.अविनाश अवस्थी, डा.रजनी सिंह, डा.जितेन्द्र कमार साखरे.डा.राज घोलप.डा.

सरेन्द्र कमार बरीयार,डा.रीना कोमरे,हरिवंश सिंह मिरी, पृथा शर्मा,डा,दीपक वर्मा,डा,एस, जोहारी,डा,रंजना जैन, आदि जबकि दसरे दिन 6 मार्च 2025 को अर्थमा,डा,गोपाल (पटना,बिहार),डा,विनोद कमार शर्मा (यमका झारखंड) प्रियंका बारला,प्रियंका गजभिये.डा. झा(पटना,बिहार),सीभिक सरकार (बरहरवा,झारखंड) (संवृक्त शोध आलेख डा. दिनेश नारायण वर्मा के साध) ने आलेख प्रस्तृत किये जबकि आनलाइन शोध आलेख प्रस्तत करने के लिए डा. नीलम (आगरा),आरती यादव,हेमवती पृष्पा, .प्रिया, डा.मनीषा प्रसाद(पटना,बिहार) अजहर इस्लाम(रानीगंज,पश्चिम बंगाल) आदि को भी आमंत्रित किया गया। इस मौके पर पाटलिपत्र विवि.,पटना,बिहार के डा. अविनाश कमार झा ने बिहार में जनजातीय आन्दोलन इतिहासलेखन का ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तत किया और इसकी आधारभूत पहलुओं की समीक्षात्मक विवेचना प्रस्तत की । संयोजक डा.पाण्डेय ने ज्ञारखंड देखों को वह भी बताया कि कल

152 शोध आलेख प्राप्त हुए और 85 आलेख प्रस्तुत किये गवे। उनके अनुसार 170 प्रतिनिधियों का पंजीकरण किया गया जो पश्चिम बंगाल,बिहार कर्नाटक,गुजरात,राज स्थान, उल्लगखंड, ३६गढ,उल्लर प्रदेश,मध्य प्रदेश,झारखंड,उडीसा, दिल्ली,महाराष्ट आदि राज्यों से थे। संयोजक डा. पाण्डेय के अनुसार इस दो दिवसीय नेशनल सेमिनार में इतिहासकारों प्राध्यपकों और शोध विद्वानों और छात्र-छात्राओं सहित कल तीन सौ से अधिक प्रतिनिधि संक्रिय रूप से शामिल हुए और विभिन्न सेशन्स में वाद-विवाद में शामिल हुए। उनके अनुसार देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थाओं के विषय के एक्सपर्ट के रूप में 25 रिसोसं पसंन आगंत्रित किये गये। डा. अरुण वाघेला (गुजरात), डा. आभा आर.पाल (३६गढ़), डा.एल 1.गायकवाड(महाराष्ट्र),डा.रंजना जैन(मध्य प्रदेश), डा.विनेश नारायण वर्मा (पश्चिम बंगाल),डा. संजय स्वर्णकार(मध्य प्रदेश). आचार्य रमेन्द्र नाथ मिश्र (डी.लिट.,पुर्व अध्यक्ष,इतिहास, संस्कृति विभाग,पंडित रविशंकर शुक्ल

रावपर.(छत्तीसगढ), डा.रविन्द्र. शर्मा (नई दिली) आदि विद्वानों ने विषय के एक्सपर्ट के रूप में नेशनल सेमिनार के विषय के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार रखे और इनकी समीधात्मक विवेचना प्रस्तत की। समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए डा.राजेश पाण्डेय.क्षेत्रीय अपर संचालक,उच्च शिक्षा विभाग,दर्ग संभाग ने जनजातियों के गौरवशाली इतिहास और इसके अनेक नायकों की गौरव गाथाओं का उक्षेख किया और अपनी शुभकामनाएं दी। मौके पर उपस्थित नेशनल सेमिनार के संरक्षक और प्राचार्य डा.अभव कमार सिंह ने भी अपनी शुभकामनाएं वी। महाविद्यालय के शिक्षक मंच संचालक डा राजेश रंजन सिंह ने कालेज परिवार की ओर से धन्यवाद जापन किया और वेश विवेश से नेशनल सेमिनार में शामिल इतिहासकारों प्राध्यपकों और शोध विद्वानों आदि के प्रति आभार व्यक्त किया। अतिथियों और रिसोर्स पूर्मन आदि को छलीगढी सम्मान वस्त्र और इतिहास विभाग के विद्यार्थियों द्वारा बनाये गये लौह शिल्प की कतियों को स्मृति चिन्ह के रूप में भेंट किया

जनजातीय समाज की अत्यंत समृद्ध संस्कृति और गौरवशाली इतिहास रहा है- संभागायुक्त

भारतीय इतिहास में जनजातीय योगदान विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ आयोजन

दर्ग। भारतीय इतिहास में जनजातीय समाज के योगदान विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोछी का आयोजन आज शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय के इतिहास विभाग में किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में दुर्ग संभागायुक्त सत्यनारायण राठौर शामिल हए। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि हेमचंद विश्वविद्यालय दुर्ग के क्लपति व संभागायुक्त सत्यनारायण राठौर ने कहा कि जनजातीय समाज की अत्यंत समृद्ध संस्कृति रही है। जनजातीय समाज का गौरवशाली इतिहास रहा है, यह सोचकर गर्व होता है कि अनेक महान स्वतंत्रता सेनानियों का जन्म जनजाति समाज में हुआ। अपने देश के लिए संघर्ष करने की परंपरा जनजाति समाज में प्रारंभ से रही है. शहीद वीर नारायण सिंह, शहीद गुंडाधर एवं गेंद सिंह जैसे अनेक महान क्रांतिकारी ने अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन करते हए अपना बलिदान दे दिया। भारत को स्वतंत्र कराने में वीर शहीदों का महत्वपूर्ण योगदान उहा है। इसके साथ ही जनजातीय समनामें



का जीवन हमेशा से प्रकृति से जुड़ा रहा है। आदिवासियों ने ही प्रकृति को सहेज कर रखा है। वे अपनी परंपराओं और संस्कृति

हैं और प्रकृति से सामंजस्य बनाए रखते हैं। कार्यक्रम में उपस्थित विशिष्ट अतिथि एवं छत्तीसगढ़ इतिहास परिषद की अध्यक्ष डॉ.

पुस्तक का विमोचन

संभागायुक्त श्री राठौर द्वारा शोध पत्रों की शोध स्मारिका तथा विभाग की शोधार्थी डॉ. निवेदिता वर्मा द्वारा लिखित पुस्तक जनजातीय संस्कृति का विमोचन भी किया गया। डॉ. निवेदिता वर्मा ने बताया यह पुस्तक मूल रूप से बस्तर की जनजातीय संस्कृति पर केंद्रित है। उद्घाटन सत्र के अंत में वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. राकेश रंजन सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन विभाग की ही डॉ. ज्योति धारकर ने किया। अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान छत्तीसगढ़ी सम्मान वस्त्र एवं विभाग के विद्यार्थियों द्वारा निर्मित लौह शिल्प की कृतियों को स्मृति चिन्ह के रूप में भेंट कर किया गया। इस अवसर पर आईजी रामगोपाल गर्ग, एसडीएम हरवंश मिरी सहित इतिहास के सभी वरिष्ठ विद्यवान, शोधार्थी एवं प्राचार्य उपस्थित थे।

इतिहास विभाग को बधाई देते हुए कहा कि जनजातीय समाज पर शोध की व्यापक संभावनाएं हैं। संपूर्ण देश में ही नहीं जनजातियों का योगदान महत्वपूर्ण है।

महाविद्यालय के प्राचार्य एवं राष्ट्रीय सेमिनार के संरक्षक डॉक्टर अजय सिंह ने देश के विभिन्न प्रांतों में हुए जनजातीय आंदोलन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह संगोष्ठी शोधार्थियों के लिए एक स्वर्ण अवसर है जिसमें जनजातियों के विस्मृत अतीत को सामने लाने का महत्वपूर्ण शोध संपन्न हो सकेगा। उदुघाटन सत्र के मुख्य वक्ता डॉक्टर रविंद्र शर्मा ने भारतीय उपमहाद्वीप की सैन्य व्यवस्था में प्रतिबिंबित जनजाति समाज के योगदान पर विद्वत्तापूर्ण शोध पत्र प्रस्तुत किया। संगोष्ठी के संयोजक एवं इतिहास विभाग के विभाग अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय ने विषय के औचित्य पर प्रकाश डालते हुए छत्तीसगढ़ एवं भारत के अन्य राज्यों से आए समानता अध्यापकों एवं शोधार्थियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए यह आशा किया कि दो दिवसीय संगोष्ठी के दौरान पढ़े जाने वाले शोध पत्रों के माध्यम से जनजातीय समाज की भूमिका को सेवान के

न्यूज डार

माता गुरुम



दुर्ग। आज दिगं की प्रथम दीक्षित पधारी। पश्चात बोहरा ने बताय के लिए निकल् विजय बोहरा, मंडलों का विष् माताजी ने मांग महाराज के शि का मंगल विह लाभ स्थानीय भव्यता और म

जिला नि सरपंच, प



चर्चा विकास

नेशनल सेमिनार में एस.आर.सी. के स्कॉलर सदस्यों का उत्कृष्ट योगदान

- कोलोनियल और इनडिजेनस खोतों का अध्ययन आवश्यक-डा.दिनेश नारायण वर्मा
- बौद्ध धर्म से जनजातीय समाज और संस्कृति स्थायी रूप से प्रभावित—डा.अंगद किशोर
- स्वतंत्रता संघर्ष में जनजातियों का योगदान महत्वपूर्ण-डा.गोपाल प्रसाद

झारखंड देखो /प्रतिनिधि।

रामपरहाट(पश्चिम बंगाल) । शासकीय विश्वनाथ यादव तमस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय,दुर्ग (छत्तीसगढ) के इतिहास विभाग में आयोजित नेशनल सेमिनार 5-6 मार्च,2025 में स्थानीयं चांदमारी रोड स्थित स्टडी एडं रिसर्चं सेंटर के स्कॉलर सदस्यों और इससे जुड़े शिक्षकों ने उत्कृष्ट योगदान किया और नेशनल सेमिनार में भारतीय इतिहास में जनजातियों का योगदान विषयक उनके द्वा-रा प्रेषित अनेक शोध आलेख सोवेनिर में शामिल किये गये। जात हो कि शासकीय विश्व नाथ यादव तमस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय,दुर्ग (छत्तीसगढ) को राष्ट्रीय मुल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (बेंगलुरु,कर्नाटक) से ए-पलस (एअ) मान्यता प्राप्त है।स्कॉलर सदस्य अमिषा राज,श्रवण कमार सौभिक सरकार, जयश्री आदि के अलावा इससे जुड़े डा. अंगद किशोर(जपला,झारखंड),डा .गोपाल प्रसाद (पटना,बिहार), डा. विनोद कमार शर्मा(दमका,झारखं

ड),डा.नीलम सिंह (आगरा,उत्तर प्रदेश),मनिषा प्रसाद (पटना, बिहार) और इसके निदेशक डा. दिनेश नारायण वर्मा ने भी नेशनल सेमिनार में शामिल होकर और इसके कुछ सदस्यों ने भी आनलाइन आलेख प्रस्तुत किये और इसकी बहस में शामिल होकर महत्वपर्ण योगदान किया। सेंटर द्वारा प्रेषित द संताल हल ऑफ 1855-1856 एडं कोलोनियल परसेपशन (अमिषा राज).भोडसेज आफ टाइबल रेसिसटैन्स इन बंगाल प्रेसिडेन्सी (डा.नीलम सिंह और डा.दिनेश नारायण वर्मा), ट्राइबल्स एडं द नेशनल स्ट्रग्ल ऑफ 1857 (सौभिक सरकार और डा.दिनेश नारायण वर्मा),तेलंगा खडिया(1806-1880)-स्वाधीनता संघर्ष का एक अलपजात जनजातीय शहीद (डा. दिनेश नारायण वर्मा),टाइबल रिलिजन बिलिफ एडं टेडिशन--रिभिलिंग इफेक्ट्स ऑफ बुद्धिज्म आन ट्राइबल सोसायटी एडं कल्चर (डा.अंगद किशोर और डा. दिनेश नारायण वर्मा),अननोन-अननोटिस्ड हिरोज टाइबल मारटिर्वस--इनभेरिटगेटिंग



स्पोरसेज

--कोलोनियल एडं इनडिजेनस (डा. दिनेश नारावण वर्मा) रोल आफ ट्राइबल्स इन द फ्रिडम मुवमेंट(डा. गोपाल प्रसाद),रिच कल्चर,ट्रेडिशन एडं कन्टीब्यशन ऑफ टाइबल्स इंडिया (जयश्री),टाइबल कल्चर एडं बीमन (अमिषा राज कमार),साइको-सोशल प्रोबलेम्श आफ ट्राइबल्स संताल परगना(डा.विनोद कुमार शर्मा),जनजातीय समाज पर आधनिकीकरण और वैश्विक (डा.मनिषा करण का प्रभाव प्रसाद) आदि के शोध सारांश कथित महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित स्मारिका में प्रकाशित हैं।टाइबल कल्चर एडं बीमन-ए क्रिटिक आफ द पोजिसन आफ विमन इन ट्राइबल सोसावटी (संवृक्त आलेख-अमिषा राज और श्रवण कुमार) को आनलाइन प्रस्तुत करते हुए श्रवण कुमार(पाकुड रोड,नयाटोला,बरह रवा.साहिबगंज) ने भारत सरकार और झारखंड की सरकार द्वारा महिलाओं के लिए अनुशॉसत और क्रियान्वित कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी और कहा कि इन

योजनाओं से आदिवासी महिलाओं

आस्काइवल





के जीवन में व्यापक परिवर्तन हए हैं। श्रवण कुमार ने सम्बन्धित तथ्यों की विस्तृत विवेचना करते हए कहा कि कथित योजनाओं के फलस्वरूप आदिवासी महिलाएं कई प्रकार की समस्याओं से निजात पा चुकी है और उन्हें रोजगार भी उपलब्ध हो रहे हैं जबकि जयश्री (पटना .बिहार) ने आदिवासियों की समृद्ध संस्कृति,परम्परा और भारत में उनके योगदान की विवेचना की । डा.गोपाल प्रसाद (पटना ,बिहार) ने स्वतंत्रता आन्दोलन के विभिन्न चरणों में आदिवासियों के योगदान को रेखांकित किया और स्पष्ट किया कि आदिवासियों से स्वतंत्रता आनदोलन में शामिल होने से इसे व्यापक जनाधार प्राप्त हो गया। डा.

नीलम सिंह और डा.दिनेश नारावण

वर्मा ने जनजातियों के ऐतिहासिक संघर्ष और आदिवासी नायकों और शहीदों को अपने शोध आलेखों में रेखांकित किया और कोलोनियल और इनडिजेनस स्रोतों के आधार पर कई अल्पज्ञात और गुमनाम जनजातीय शहीदों की जानकारी दी। डा. विनोद कुमार शर्मा (दमका)ने अपने आलेख में जनजातियों की मनोबैजानिक और संसामाजिक मस्याओं को उजागर किया जबकि डा. मनिषा प्रसाद (पटना,बिहार) और सौभिक सरकार (संयंक्त आलेख सौभिक सरकार और डा.दिनेश नारावण वर्मा) ने 1857 के राष्ट्रीय समर मों जनजातियों के योगदान की राष्ट्रीय आलोके में विवेचना प्रस्तृत की। डा.अंगद किशोर और डा.दिनेश नारावण वर्मा ने अपने संवक्त शोध

आलेख में जनजातियों के धर्म, समाज और संस्कृति पर बौद्ध धर्म के प्रभाव की विवेचना की और इसके प्रामाणिक ऐतिहासिक पहलओं को स्पष्ट किया। मौके पर सेटर निदेशक डा.दिनेश नरावण वर्मा नें अपनी रचना संताल विग्रोह 1855-1856-भारतीय ले-खक और राष्ट्रवादी इतिहास-लेखन की प्रति छत्तीसगढ इतिहास परिषद की अध्यक्षा और विशिष्ट अतिथि डा.आंभा आर.पाल (सेवानिवृत प्रोफेसर) भेंट की। डा. वर्मा ने डा. अंगद किशोर की रचना झारखंड की बौद्ध विरासत(प्राक्कथन-डा. दिनेश नारायण वर्मा) की प्रति इतिहास विभाग के अध्यक्ष और नेशनल सेमिनार के संयोजक प्रोफ सर डा.अनिल कुमार पाण्डेय और डा. पाण्डेय सहित प्रख्यात वरिष्ठ इतिहासकार डा.रविंद्र शर्मा(पूर्व अध्यक्ष,इतिहास विभाग,कुरुक्षेत्र विवि.कुरुक्षेत्र) को अइंडियल रिसर्च रिव्य (वाल्यम 80,नं.1 दिसम्बर 2024,एडिटर इन चिफ प्रोफेसर कमल प्रसाद बौद्ध,डीन,फैक्लटी एजुकेशन,पाटलिपुत्र विवि.,पटना,बिहार प्रिन्सिपल टिचर्स टेनिंग कालेज,पटना,बिहार) की प्रति भेंट की।

જલિયાવાલા બાગથી પણ મોટો નરસંહાર માનગઢ હત્યાકાંડ : ર્ડા.સુરેન્દ્ર બારીઆ



શહેરા તા.૦૮

પંચમહાલ જિલ્લાના મોરવાહડક સરકારી કોલેજના ઇતિહાસ વિભાગના ડૉ.સુરેન્દ્ર બારીઆ નાઓએ છત્તીસગઢ ના સેમિનારમાં ભાગ લઈ માનગઢ હત્યાકાંડ વિશે વિસ્તૃત જાણકારી આપી હતી.તારીખ ૫ ,૬ માર્ચ ૨૦૨૫ ના બે દિવસ રાષ્ટ્રીય સેમિનારમાં મોરવા હડફ કોલેજના ઇતિહાસ વિભાગના વડા ડૉ. સુરેન્દ્ર બારીઆએ ભાગ લીધો હતો. આ સેમિનાર ગવર્મેન્ટ વી.વાય. ટી. પી.જી. ઓટોનોમસ કોલેજ દૂર્ગ, છત્તીસગઢના ઇતિહાસ વિભાગ દ્વારા આયોજિત કરવામાં આવ્યો હતો.

આ સેમિનારમાં ડૉ.સુરેન્દ્ર બારીઆ એ ''રાષ્ટ્ર કે સ્વતંત્રતા સંઘર્ષ મે આદિવાસી પ્રતિસાદ ગોવિંદ ગુરુ કા માનગઢ આંદોલન'' વિષય પર તેમનું પેપર રજૂ કર્યું હતું, અને ખાસ જણાવ્યું હતું કે કેવી રીતે પશ્ચિમ ભારતના ભીલોમાં ગોવિંદ ગુરુએ વેઠમાં કામ ન કરવું, દારુ ન પીવો, માંસ નિષેધ, ચોરી ન કરવી જેવા ઉપદેશોથી સામાજિક-ધાર્મિક સુધારા કરીને આદિવાસીઓને આત્મ સન્માન સાથે પોતાનું જીવન જીવવાના ઉપદેશ આપ્યા હતા. તેથી ડુંગરપુર, દાહોદ, પંચમહાલના આદિવાસીઓમાં ભગત ભીલોનો એક વર્ગ તૈયાર થયો હતો. આદિવાસીઓમાં આ પ્રકારના સુધારાઓ દેશી રાજ્યો અને બ્રિટીશ સરકારને ગમ્યું ન હતું. અને તેમણે ગોવિંદ ગુરુ અને ભગત ભિલો પર અત્યાચારો કરવાનું ચાલુ કર્યું હતું તેના પ્રતિકારમાં ગોવિંદ ગુરુએ ભીલરાજની સ્થાપવાની વિચાર મૂક્યો અને એ ભગત બીલોએ ઉપાડી લીધો હતો . તે સકળ બનાવવા માટે પુંજા ધીરા પારગીના આગેવાનીમાં માનગઢ પહાડી ઉપર ૧૭ નવેમ્બર ૧૯૧૩ ના રોજ લાખો ભગતો એકત્રિત થયા હતા. આ મંશા પુરી

ન થવા દેવા માટે દેશી રાજ્યો અને બ્રિટિશ સરકારે જે નરસંહાર કર્યો હતો. જે માનગઢ હત્યાકાંડ હતો. જેમાં સરકારી ચોપડે ૨૦ ભિલો મુ ત્યુ પામ્યાં હતાં પરંતુ ૨૦ નહિ પણ ૧૫૦૭ જેટલા ભીલો શહીદ થયા હતાં. જે જલિયાવાલા બાંગ કરતા ખૂબજ મોટો નરસંહાર હતો. પરંતુ આ ઘટનાને ઇતિહાસમાં જે સ્થાન મળવું જોઈતું હતું તે આજ દિન સુધી મળ્યું નથી. તેમના પર ર્ડા. અરુણ વાઘેલા એ 'આઝાદી ના જંગમાં આદિવાસી રંગ' નામનું પુસ્તક લખી ગુણગાન ગાવાની કોશિશ કરી છે, પણ રાષ્ટ્રીય સ્તર પર જે મહત્વ ઇતિહાસમાં મળવું જોઈએ તે આજ દિન સુધી ઇતિહાસમાં તેને સ્થાન આપવામાં આવ્યું નથી.

આ બે દિવસીય રાષ્ટ્રીય સેમિનારમાં ૩૦૦ થી વધુ મૂર્ધન્ય ઈતિહાસકારો, પ્રોફેસરો, શોધાર્થીઓ એ ભાગ લીધો હતો. આ સંપૂર્ણ સેમિનારનું સફળ આયોજન ડાં. અનીલકુમાર પાંડે અને તેમની ટીમ દ્વારા કરવામાં આવ્યું હતું.

आदिवासियों की संस्कृति में ही भारतीय संस्कृति का अस्तित्व रचा-बसा है : डॉ. विनोद कुमार

राष्ट्रीय सागर संवाददाता

हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग छत्तीसगढ़ के शासकीय वि. या. ता. स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग के इतिहास विभाग द्वारा आयोजित एक दो दिवसीय अंतर्विषयक राष्ट्रीय सेमिनार में संताल परगना कॉलेज दुमका के मनोविज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष सह मेंटल हेल्थ काउंसलिंग सेंटर के निदेशक डॉ विनोद कुमार शर्मा ने एक रिसोर्स पर्सन के रूप में भाग लिया। इस सेमिनार में डॉ विनोद कुमार शर्मा ने ' साइको - सोशल प्रॉब्लम्स ऑफ बैकवर्डनेस ऑफ ट्राइबल्स इन संताल परगना ' विषय पर अपना पेपर प्रस्तत किया। डॉ शर्मा ने कहा कि टाइबल्स के समस्याओं की चर्चा



करने से ज्यादा जरूरत उन्हें सशक्त करने और उनके मनोदशा को सुधारने की जरूरत है। ट्राइबल्स के प्रति मौजूद नेगेटिव कॉग्निशन को दूर कर उसके संस्कृति को उन्नत और समृद्ध बनाने की जरूरत है क्योंकि संताल या आदिवासियों की संस्कृति में ही भारतीय संस्कृति का अस्तित्व रचा बसा है। डॉ शर्मा ने यह भी कहा कि संताल परगना ज्ञान और शोध का केंद्र है। संताल मृदुभाषी, सरल व्यक्तित्व और मिलनसार प्रकृति के होते है। जरूरत है उनके प्रति सकारात्मक सोच रखते है उनके भावनाओं को

कद्र करने की चाहिए। उ शोषण, अत्याचार आदि से रखते हुए उनके मन से भय, इ विषादों, पूर्वाग्रहों को दूर करने जरूरत है। उसके आइडियोलो को समझने की जरूरत है ता उनके जीवन को बेहतर बनाया सके और आत्मविश्वास बढ़ाया जा सके जिससे वो भी के विकास में अमुल्य योगदान सके। इस दो दिवसीय अंतर्विष राष्ट्रीय सेमिनार में देश के विधि करीव 3 हिस्सों से अकादमीशियन और शोधार्थियो ऑनलाइन एवं ऑफलाइन हिन लिया। इतिहास विभाग विभागाध्यक्ष सह कन्वेनर अनिल कुमार पांडे के नेतृत्व आयोजित इस सेमिनार में पि बंगाल के प्रख्यात इतिहासकार डी एन वर्मा भी उपस्थित थे।

ाय व उच्च न्यायालय के अपराधिक वादों

ब्रीफ न्यूज

SKILL ENHANCEMENT COURSE

Loh Silp

S.No		No of Students benefitted	Fund allotted	Fund Utilized
01	Loh Silp Traing Programme	35	50,000	59657

The skill enhancement training program in Loh Silp of Bastar is a valuable initiative for students. It helps them develop their skills in metal craftsmanship, a traditional art form of Bastar

. This training program is essential for the students to learn and preserve the traditional craft of Bastar, which is a significant part of the region's cultural heritage

The program provides students with hands-on experience in creating intricate designs and patterns on metal, which is a unique aspect of Loh Silp

. By participating in this program, students can gain a deeper understanding of the traditional techniques and methods used in Loh Silp, which is a valuable skill for their future careers

Additionally, the program also helped students to develop their creativity, problem-solving skills, and attention to detail, which are essential skills for any craft or art form

कार्यालय, प्राचार्य शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.) फोन न. 0788.2359688, फैक्स न. 0788.2212030 Website: www.govtsciencocollegedurg.ac.in

दिनांक 14.01.2025

सूचना

महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक/सहायक प्राध्यापक/ ग्रंथपाल/ क्रीड़ाधिकारी/कर्मचारी एवं विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि महाविद्यालय के विद्यार्थियों के कौशल उन्नयन हेतु इतिहास विभाग द्वारा 11 दिवसीय "बस्तर लौह—शिल्प" कार्यशाला का आयोजन दिनांक 15 से 25 जनवरी 2025 तक किया जाना हैं । कार्यशाला का शुभारंभ शहीद वीरनारायण सिंह समागार में 15 01.2025 को प्रातः 11.00 बजे से होगा ।

विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग

शास वि.या.चारनाव स्वश्मसी गहावि..

साईंस कॉलेज में बस्तर लौह शिल्पकला प्रशिक्षण कार्यशाला का शुभारंभ

विद्यार्थियों को अपने आप को मजदरी के स्थान पर परिश्रम हेतु तैयार करना चाहिए तभी उन्हें भविष्य में सकारात्मक परिणाम मिलेगें। ये उदगार शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय. दर्ग के जनभागीदारी समिति के अध्यक्ष शिवेन्द्र सिंह परिहार ने आज व्यक्त किये। श्री परिहार महाविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा आयोजित 10 दिवसीय बस्तर लौह षिल्प कला प्रशिक्षण कार्यशाला तथा राष्ट्रीय यवा दिवस के उद्घाटन समारोह में बडी

मरचेंट मिल में कार्यरत हैं।

दर्ग. 15 जनवरी (देशबन्ध)। संख्या में उपस्थित प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों को संबोधित कर रहे थे। श्री परिहार ने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि

> स्वामी विवेकानंद के आदर्शो पर चलकर विद्यार्थी आगे बडे : शिवेन्द्र परिहार

वे स्वामी विवेकानंद के आदर्शी पर चलकर अपने भारतीय होने पर गर्व करें।

सरस्वती पूजन, सरस्वती वंदना एवं छत्तीसगढ राज्य गीत अरपा पैरी के धार के प्रस्तृतिकरण के साथ आरंभ हये कार्यक्रम

में संचालक डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव ने बस्तर लौह शिल्प कार्यशाला की प्रासंगिकता एवं उससे विद्यार्थियों को होने वाले लाभ पर प्रकाष डाला। अपने स्वागत भाषण में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अजय कुमार सिंह ने कहा कि स्वामी विवेकानंद हर यग में हर उम्र के लोगों के लिए प्रेरणास्त्रोत है। डॉ. सिंह ने स्वामी विवेकानंद के जीवन से जुडे अनेक संस्मरणों का उल्लेख भी किया। दर्ग संभाग के अपर संचालक, उच्चशिक्षा डॉ. राजेश पाण्डेय ने लक्ष्य आधारित विक्षा पर जोर देते हुए 🎤 🏲 शेष पृष्ठ ९ पर 🏲

साईंस कॉलेज में ...

कहा कि साईस कालेज, दुर्ग के इतिहास विभाग द्वारा 10 दिवसीय बस्तर लौह शिल्प कार्यषाला आयोजित की जा रही है, वह राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप एवं विद्यार्थियों की कौषल क्षमता के आधार पर रोजगार चयन करने की दिशा में पहला कदम है। डॉ. पाण्डेय ने कहा कि कार्यषाला के दौरान विद्यार्थियों द्वारा निर्मित होने वाले में लौह शिल्पों का उपयोग महाविद्यालयों में होने वाले कार्यक्रमों के दौरान प्रदान किये जाने वाले स्मिति चिन्ह के रूप में किया जायेगा। साईंस कालेज. दर्ग द्वारा स्टॉर्टअप योजना के अंतर्गत यह अन्य महाविद्यालयों के लिए भी अनुकरणीय प्रयास है। दुर्ग जिला भाजपा के अध्यक्ष सरेन्द्र कौषिक ने भी अपने विचार करते हुए युवा छात्र-छात्राओं से आव्हान किया कि वे अपने अध्ययन एवं भविष्य में सामंजस्य स्थापित करते हुए महाविद्यालय में पठन-पाठन करें। कार्यक्रम के आरंभ अतिथियों का स्वागत प्राचार्य डॉ. अजय कुमार सिंह, वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. एस.एन.झा, डॉ. जगजीत कौर सलुजा ने किया। राष्ट्रगान के साथ समाप्त हुये कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनिल पाण्डेय ने दिया तथा अतिथियों को स्मति चिन्ह भेंट करने वालो में में डा. अनिल कष्यप, डॉ. ए.के. पाण्डेय, डॉ. अभिनेश सुराना, डॉ. के. पद्मावती शामिल थे।

नवभारत



दुर्ग शहर

विद्यार्थियों की कलाकृतियों को करेंगे अतिथियों को भेंट

साइंस कॉलेज में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत अभिनव प्रयोग

नवभारत रिपोर्टर । दुर्ग ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत विद्यार्थियों की कौशल क्षमता के आधार पर उनको रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दर्ग में अभिनव प्रयोग आरंभ किया जा रहा है। यह जानकारी देते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अजय कुमार सिंह ने बताया कि हाल ही में महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग द्वारा विद्यार्थियों हेत् बस्तर की लौह शिल्प वास्तुकला पर केन्द्रित 15 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन महाविद्यालय में किया गया था। इस कार्यशाला के दौरान विद्यार्थियों ने लौह शिल्प पर आधारित अनेक मनमोहक कलाकृतियां तैयार की। इन कलाकृतियों विद्यार्थियों द्वारा निर्मित कलाकृतियों को अतिथियों को प्रदान किए जाने वाले स्मृति को समाज में पहुंचाने तथा विद्यार्थियों को महाविद्यालय द्वारा क्रय किया गया तथा चिन्ह मोमेंटो के स्थान पर महाविद्यालय के

प्रोत्साहित करने मिलेगा 📲

छात्रों को 25% राशि

महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव ने बताया कि प्राचार्य डॉ. अजय कमार सिंह के निर्देशानसार प्रत्येक कलाकृति के विक्रय मूल्य का 25 प्रतिशत राशि उसके निर्माणकर्ता विद्यार्थी को प्रदान की जाएगी, इससे उस विद्यार्थी के मन में अपने कौशल क्षमता के आधार पर और अधिक कलाकृतियों के निर्माण में रूचि जागेगी। शेष राशि का उपयोग कलाकृति के निर्माण हेत् आवश्यक कच्चा माल, ईंधन एवं सुसज्जित करने हेत् अन्य सामग्री के क्रय में किया जाएगा।

पर स्व उद्यमी बनाने के उद्देश्य से विभिन्न सेमीनार तथा अन्य आयोजनों में प्रदान किए जाने का निर्णय लिया गया।



डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि न केवल महाविद्यालय के विभिन्न विभाग बल्कि समीप स्थित महाविद्यालयों से भी विद्यार्थियों द्वारा निर्मित लौह शिल्प

ग्रीष्मकालीन अवकाश

में फिर प्रशिक्षण

कलाकतियों को क्रय किए जाने संबंधी निवेदन प्राचार्य डॉ. सिंह को प्राप्त हो रहे हैं। प्राचार्य डॉ. सिंह ने बताया कि सेमेस्टर ब्रेक के दौरान एवं ग्रीष्म अवकाश में विद्यार्थियों को पेरित कर स्वरोजगार प्राप्ति के उद्देश्य से बडी संख्या में लौह शिल्प कलाकृतियां बनाने का प्रशिक्षण आयोजित किया जाएगा।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अजय कमार सिंह के अनसार विद्यार्थियों द्वारा स्वरोजगार एवं कौशल क्षमता के आधार महाविद्यालय में आयोजित होने वाले विद्यार्थियों द्वारा निर्मित कलाकृतियों को भी स्टार्ट-अप योजना आरंभ करने हेत प्रेरित करने के उद्देष्य से यह अभिनव प्रयास जाएगी।

गत सप्ताह माइक्रोबायलॉजी एवं वायोटेक्नालॉजी विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार में विद्यार्थियों द्वारा निर्मित कलाकृतियों को स्मृति चिन्ह के रूप में अतिथियों को भेंट किया गया, जिसकी सभी अतिथियों ने सराहना की। इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कमार पाण्डेय ने बताया कि बस्तर से आए 3 प्रशिक्षकों ने विद्यार्थियों को वस्तर के लौह शिल्प आधारित कलाकृति निर्माण का गहन प्रशिक्षण दिया।, जिसका विद्यार्थियों ने भरपूर लाभ उठाया। डॉ. पाण्डेय के अनुसार आगामी मार्च माह में महाविद्यालय के रसायन एवं प्राणी शास्त्र विभाग द्वारा आयोजित किए जाने वाले इंटरनेशनल सेमीनार में तथा इतिहास विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में विद्यार्थियों द्वारा निर्मित लौह शिल्प कलाकतियां ही अतिथियों को भेंट की

11 दिवसीय आयोजन में छत्तीसगढ़ के अलग-अलग कॉलेजों के प्राध्यापक भी पहुंचे बस्तर की लौह शिल्प कला की प्रदर्शनी साइंस भिलाई। साइस कॉलेज दुर्ग में लोक संस्कृति के संरक्षण और छतीसगढ़ कला-संस्कृति को कॉलेज में लगाई गई, स्टूडेंट्स ने जाना इतिहास महेजने के उद्देश्य से एक कार्यशाला का कार्नर आयोजन किया गया। साथ ही लौह शिल्प उला के अतर्गत तैयार उत्पादों की पदर्शनी लगाई गई।शासकीय विश्वनाय यादव बस्तर की ऐतिहासिक छवि को लौह शिल्प में उक्तेग तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, प्रदर्शनी के दौरान जानकारी दी गई कि लौह शिल्प में बस्तर की इन्द्रधनके र्के इतिहास विभाग द्वारा यह आयोजन किया जीवन छवि के चित्रों को अंकित किया जाता है। बस्तर की ऐतिहासिक छि गया। इसमें छत्तीसगढ़ के अलग-अलग को उकेरा जाता है। इस दौरान विस्तार से कला से जुड़ी जानकारी दी गई। जिलों के पाध्यापक और विद्यार्थी शामिल हए। साथ ही बताया गया कि इसे सहेजने के लिए शासन स्तर पर अभियान ग्लाया जा रहा है। लोगों को जागरूक किया जा रहा है। शैक्षणिक संस्थाओं छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोक संस्कृति के में इसकी जानकारी दी जा रही है। कार्यशाला में बड़ी संख्या में इतिहास विभाग संरक्षण एवं युवा पीढ़ी को इससे परिचित तथा महाविद्यालय के अन्य विभागों के विद्यार्थी लौह शिल्प को न केवल कराने तथा खरोजगार हेत् पेरित करने के उत्साहपूर्वक सीख रहे हैं, वर-कलादक्षता के साथ कृतियों का निर्माण भी कर लिए यह आयोजन किया गया। रूसा २.० के अंतर्गत विद्यारियों के कौशल उन्नयन हेतु स्टुडेंट्स ने जाना शिल्प कला की बारीकियों को सुपसिध्द बस्तर लौह शिल्प की ग्यारह दिवसीय कार्यशाला में जानकारी दी गई। लौह कार्यशाला में बस्तर लौह शिल्प के राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार राजेन्द्र बघेल, सह-शिल्प कार्यशाला के उद्घाटन अवसर प्राचार्य कलाकार मनोज कुमार बघेल एवं राजू बघेल विद्यार्थियों को शिल्पकला की बारीकियों से डॉ. एके सिंह ने किया इस अवसर पर परिचित कराया। इतिहास विभाग के डॉ. एके पाण्डेय ने बताया कि लौह शिल्प के निर्माण की प्रक्रिया में सर्वप्रथम लोहे की चादर पर कलाकृति को उकेरा जाता है, और फिर छेनी, हथौडी अतिरिक्त संचालक, उच्चशिक्षा विभाग डॉ. के प्रयोग से उसे काटा जाता है। अगले चरण में कृति की सृक्ष्मताओं को उमारा जाता है। तत्पश्चात राजेश पाण्डेय. जनभागीदारी समिति के लोहें के तार से हाथ, पैर, आभूषण, वाद्ययंत्र तथा अन्य उपकरणों की भट्टी में पकाकर मनचाही आकृतियों का निर्माण किया जाता है। अंतिम चरण में कलाकृति की घिसाई पहले केवल काले सदस्य, इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय मौजूद थे। रंग से कर फिर विविध रंगों से सुसज्जित किया जाता है।

विद्यार्थियों द्वारा निर्मित कलाकृतियों को करेंगे अतिथियों को स्मृति चिन्ह के रूप में भेंट

साईस कालेज में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत अभिनव प्रयोग

दुर्ग, 12 फरवरी (देशबन्ध्)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत विद्यार्थियों की कौशल क्षमता के आधार पर उनको रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देष्य से शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय. दर्ग में अभिनव प्रयोग आरंभ किया जा रहा है। यह जानकारी देते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अजय कमार सिंह ने बताया कि हाल ही में महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग द्वारा विद्यार्थियों हेत बस्तर की लौह शिल्प वास्तकला पर केन्द्रित 15 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन महाविद्यालय में किया गया था। इस कार्यशाला के दौरान विद्यार्थियों ने लौह शिल्प पर आधारित अनेक मनमोहक कलाकतियां तैयार की । इन कलाकतियों को समाज में पहंचाने तथा विद्यार्थियों को स्वरोजगार एवं कौषल क्षमता के आधार पर स्व उद्यमी बनाने के उद्देष्य से विद्यार्थियों द्वारा निर्मित कलाकतियों को महाविद्यालय द्वारा ऋय किया गया तथा महाविद्यालय में आयोजित होने वाले विभिन्न सेमीनार तथा अन्य आयोजनों में अतिथियों को प्रदान किये जाने वाले स्मृति चिन्ह

इससे कॉलेज ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के तहत



मोमेंटो के स्थान पर महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा निर्मित कलाकतियों को भी प्रदान किये जाने का निर्णय लिया गया।

महाविद्यालय के प्राचार्य के अनसार विद्यार्थियों द्वारा स्टार्ट-अप योजना आरंभ करने हेत प्रेरित करने के उद्देष्य से यह अभिनव प्रयास आरंभ किया गया है। इसके प्रथम चरण में गत सप्ताह माइक्रोबायलॉजी एवं बायोटेक्नालॉजी विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार में विद्यार्थियों द्वारा निर्मित कलाकृतियों को स्मृति चिन्ह के रूप में अतिथियों को भेंट किया गया, जिसकी सभी

कॉलेज में हुई थी। इसमें विद्यार्थियों ने अनेक कलाकृति बनाने के लिए जरूरी कच्चे सामन और

मनमोहक कलाकृतियां बनाई। इतिहास विभाग के उसे रंगीन बनाने की सामग्री की खरीदी और ईंधन

अतिथियों ने सराहना की। इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कमार पाण्डेय ने बताया कि बस्तर से पधारे 3 प्रशिक्षकों ने विद्यार्थियों को बस्तर के लौह शिल्प आधारित कलाकति निर्माण का गहन प्रषिक्षण दिया। जिसका विद्यार्थियों ने भरपर लाभ उठाया।

महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव ने बताया कि प्राचार्य डॉ. अजय कुमार सिंह के निर्देशानुसार प्रत्येक कलाकृति के विक्रय मल्य का 25 प्रतिशत राशि उसके निर्माणकर्तो विद्यार्थी को प्रदान की जायेगी, इससे उस विद्यार्थी के मन में अपने कौषल क्षमता के आधार पर और अधिक कलाकतियों के निर्माण में रूचि जागेगी।शेष राषि का उपयोग कलाकति के निर्माण हेत् आवश्यक कच्चा माल, ईंधन एवं सुसज्जित करने हेतु अन्य सामग्री के ऋय में किया जायेगा। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि न केवल महाविद्यालय के विभिन्न विभाग बल्कि समीप स्थित महाविद्यालयों से भी विद्यार्थियों द्वारा निर्मित लौह षिल्प कलाकतियों को ऋय किये जाने संबंधी निवेदन प्राचार्य 🏲 🏲 शेष पृष्ठ ९ पर 🗲

#Startup लौह शिल्प कलाकृति का विद्यार्थियों को दिया प्रशिक्षण, फिर उनके बनाए सामानों को खरीदा

साइंस कॉलेज में तैयार होंगे मोमेंटो, बनाने वाले छात्रों को मिलेंगे पैसे



पत्रिका न्यूज नेटवर्क

धिलाई वार्षिकोत्सव सेमीनार और के विद्यार्थियों को इसमें शामिल वेबीनार जैसे किसी भी कार्यक्रम में किया जाएगा। कॉलेज द्वारा खरीदी आने वाले अतिथियों को अब साइंस गई कलाकृतियों का पैसा इन्हें बनाने कॉलेज मोमेंटो और फ्लॉबर बुके बाले कॉलेज के विद्यार्थियों को ही बाहर से खरीदकर नहीं देगा। इस मिलेगा। फिज्लखर्ची को बंद करते हुए मारंग कॉलेज प्रशासन ने तथ किया हैं कि वे अपने विद्यार्थियों को ऐसी कलाकृतियां बनाना सिखाएंगे। विद्यार्थी जो मोमेंटो अपने हाथों से तैयार करेंगे। उसे साइस कॉलेज खरीदेगा, और यही कलाकृतियां फिर

यह एक तरह का स्माल स्केल डॉ. अजय कुमार सिंह स्टार्टअप होगा. जो कॉलेज के प्राथम सर्वस कॉलेज वर्ग

स्वरूप दी जाएगी।

विद्यार्थी चलागे। फिलहर, कल संकाय के विद्यार्थियों को इसमें जोता गया है, लेकिन धीरे-धीरे सभी विषयों

विद्यार्थियों की रिकल्स डेवलय 🗸 करते हुए उन्हें स्टार्टअय से जीडने यह पहल की गई है। सेमेस्टर बेक के दौरान और गीष्म अवकाश में विद्यार्थियों के लिए और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाएंगे. जिससे और भी छात्र इसमें जुड़ कार्यक्रमों के अतिथियों को भेट व्यवस्त



इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष हाँ, अनिल कमार पांडेय ने बताया कि बस्तर से पधारे तीन प्रशिक्षकों ने विद्यार्थियों को बस्तर के लीह शिल्प आधारित कलाकृति निर्माण का प्रशिक्षण दिया। मार्च माह में रसायन एवं पाणी शास्त्र विभाग द्वारा आयोजित किए जाने वाले इंटरनेशनल सेमीनार में मोमेंटो अविविद्यों को भेंट किए जाएंगे।

छात्रों को मिला 15 दिनों का प्रशिक्षण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत जो भी कलाकति अपने श्रमता के आधार पर उनकी रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से यह कोशित की गई है। हाल ही में कॉलेज के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग ने विद्यार्थियों को बस्तर की लॉड शिल्प वास्तकला पर केन्द्रित 15 दिवसीय कार्यशाला के जरिए प्रशिक्षण दिया। इस कला के विशेषज्ञों ने विक्वविंवों को लीह शिल्प बनाने की बारीकियां सिखाई। इसमें विद्यार्थियों ने नीव भी रख दी।

हाथों से तैयार की, उसे साइंस कॉलेज ने तब दाम देकर खरीद लिया। इसके बाद तय किया गया कि विभिन्न सेमीनार और अन्य आयोजनों में अतिथियों को दिए जाने वाले स्मित चिन्ह मोमेंटो के स्थान पर विद्यार्थियों द्वारा निर्मित कलाकतियां दी जाएगी। विद्यार्थियों की बनाई इन कलाकृतियों को खरीदने के साथ-साथ कॉलेज प्रशासन ने छात्रों के स्टार्टअप की



अपनी पहुंद कर सकेंगे दूसी और तीह फ़िल्प बनाने अवगे कार स्थानित कर सकेंगे। इसे व्यावसायिक रूप अध्यक्ष डॉ. अनित कुमार पांडेय ने बताथ कि बस्तर में खर्च की जाएंगी सेमोसर केंक्र के रोगन और को कला भी मीडिंग इससे वह पढ़ाई के साथ हुन भी देते, जिला समेत संभाग और राज्य में होने जाते. से आए तीन प्रिश्तकों ने निवारियों को तीह फिल्प मार्गी को सुद्धियों में निवारियों को तीह फिल्प

भीकी और सर्प्रथम की दिवा में अमें बढ़ते अचन जामहोद आवोजों में सहम होतेन के लीह फिल्प बनने और उसे रामे के बोर प्रीशरण दिया





















https://youtu.be/BpfbZrpD_uk?si=DDynVW0g3XeukVg-i_Doordarshan News

EDUCATIONAL TOUR

11 JANUARY 2025

EXCAVATIONS SITES- TARRI GHAT & RIVA (ARANG)

S.No.	Places od Educational Tours	Date of Educational tour	No. Of Students Benefitted	Fund Allotted	Fund utilized
01	Tarri Ghat & Riva (Arang)	•	25	100000	14700

Tarri Ghat (Patan) and Rewa (Arang) educational tour report

Educational tours to historical sites are crucial for history students as they offer a dynamic and engaging way to learn, moving beyond textbook knowledge and into a realm of tangible, experiential learning. These tours foster deeper understanding, critical thinking, and a lasting appreciation for history by connecting students with the physical spaces and artifacts of the past.

- An educational tour to the excavation site Tarri Ghat (Patan) and Rewa (Arang) was organized on 11 January 2025 for the postgraduate students of the department from the amount allocated by the college under RUSA 2.0
- During the tour, under the guidance of two professors of the department, more than 25 postgraduate students first inspected the excavation site of Tarrighat and understood its historical importance.
- Thereafter, the college team reached Rewa (Arang) where excavation work is being carried out by the Archaeology Department, Chhattisgarh Government under the guidance of Dr. Veerottam Sahu. The students themselves carried out the excavation work and became familiar









GUEST IECTURE

S.No	Name of Programme	No of Students benefitted	Fund allotted	Fund Utilized
01	Guest Lecture	35-50	30000	23280

S.No	Name of The Professor	Topic	Date of Lecture	No. of Students benefitted
1	Dr. Sanjay Kumar, Principal, Government College, Satpuli, Uttarakhand (Online Mode)	Bharatiya Gyan Parampara Ki Baudhik Pristhbhumi	03/01 2025	30
2	Dr. Kishore Agarwal, Retired Professor, History, Raipur	Freedom Movement in Chhattisgarh	04/01 2025	18
3	Dr. Dinesh Rathore Principal, Government New College Basin District - Balod	History- Meaning & definition	07/01 2025	26
4	Dr. B.K.P Singh Principal, Government College, Mainpur	Subhash Chandra Bose	07/02 2025	26
5	Dr. Sujatha Gourkhade, Karnataka Central University, Kalaburagi (Online Mode)	Raja Ram Mohan Rai & his contributions in modern India	18/02 2025	21
6	Dr. Pooja Sharma, Assistant	Mahatma Gandhi and Subhash Chandra	21/02/2025	30













Extension Activity

An Extension activity was organized by the Department of History on 21 January 2025 in Dhaniram Sahu Kisan Higher Secondary school Arjuni. M.A. II Semester Student Toshan Lal has trained students from 10th to 12 classes about steps in folk dances of Chhatisgarh. The faculty member ,Sri Ramkishor Vastrakar discussed with students about the importance of history and oppurtinity of employment for History students





Extension Activity

The Department of History visited the Government Higher Secondary School, village Thanoud on 28 January 2025. M.A.II semester students of the department, Monika Deshmukh and Damini, shared their views on the national movement of India with the school students. A quiz programme was also organized for the students, and the winners were given prizes.

कार्यालय प्राचार्य पं.ल.ला.शर्मा शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय थनौद जिला—दुर्ग (छ०ग०)

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग के इतिहास विभाग द्वारा रुसा 2.0 के तहत विस्तार गतिविधि कार्यक्रम के अंतर्गत एम.ए. इतिहास द्वितीय सेमेस्टर के 03 छात्र/छात्राओं द्वारा इतिहास के महत्व तथा इतिहास की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं की जानकारी दिनांक 28/01/2025 को दी गई। इससे हमारे विद्यार्थी निश्चित रुप से लाभान्वित हुए। हम महाविद्यालय के इन छात्रों के उज्जवल भविष्य की कामना करते है।







